प्रवचन

परम हंस श्री हंसानंदजीसरस्वती दण्डीस्वामी जी

विषय तालिका

CD # 44 – B * MAY 2011 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.mp3	26	⊕			सच्चि०ब्रह्म निनि०है वह एक अद्वितीय है एवं परमार्थ तत्त्व है तथा जिसका उत्पत्ति-नाश होता है वह व्यवहारिक है और उसकी उत्पत्ति निनि० से ही होती है। **ब्रह्मोपनिषद ::** भगवान के ३ रूप - नि०नि०,स०नि०,स०सा०। **सृष्टिक्रम निरूपण :-** सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम अद्वितीय ब्रह्म से पुरुष में छायारूप अव्यक्त नाम की शक्ति 'माया/अज्ञान/अविद्या' उत्पन्न हुई । क्रमशः ----	
2	02.mp3	35	⊕	⊕	१	भगवान का मनुष्य अवतार त्रिकाण्डमय वेद विहित 'कर्म-उपासना-ज्ञान' की सम्यक प्रकार से शिक्षा देने के लिये हुआ । भगवान राम द्वारा **नवधा भक्ति :: प्रथम** - संत संग, **द्वितीय** - मेरी कथा में प्रेम, **तृतीय** - गुरुपद सेवा एवं **चतुर्थ** - मेरा गुणगान	
3	03.mp3	23	⊕	⊕		**वेद में भगवान के ३ रूप ::** १ **निर्गुण निराकार**-'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' वह नित्य कालातीत, अखंड अनंत ज्ञानरूप है ऐसे ही आनंद भी अनादि अनंत है २ **सगुण निराकार**-इसी ब्रह्म से पुरुष में छाया के समान माया का प्रादुर्भाव हुआ, इस त्रिगुणात्मिका अज्ञान अविद्या स्वभाव प्रकृति के साथ ब्रह्म को सगुण निराकार कहते हैं ३ जब ब्रह्म आकारों के साथ है तो वह **सगुण साकार** है । वास्तव में हम अकर्म द्रष्टा साक्षी हैं ।	१
4	04.mp3	33	⊕	⊕		सृष्टि के आदि में एक अद्वितीय ब्रह्म ही था जिसका स्वरूप 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' है । भगवान आकाश की भाँति व्यापक एवं आदि - अंत रहित हैं । **गरुड़ और मच्छर का प्रसंग** ।	
5	05.mp3	33	⊕	⊕	२	भगवान राम द्वारा **नवधा भक्ति :: पंचम** भक्ति -अर्थ सहित मंत्र जाप, **छटी** भक्ति - शम दम एवं केवल मेरी शरण और भक्ति 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः'	
6	06.mp3	26	⊕	⊕		**वेद में भगवान के ३ रूप ::** निनि०, सनि० व ससा०-अग्नि का दृष्टान्त :: १ **निर्गुण निराकार**-व्यापक अविनाशी सत् चेतन घन आनंद राशि अद्रष्टो द्रष्टा सबके हृदय में स्थित है २ **सगुण साकार** दिखाई पड़ने वाला दृश्य मायाकृत है वह देख नहीं सकता	२
7	07.mp3	36	⊕			**वेद में भगवान के ३ रूप ::** निनि०, सनि० व ससा० :: उपनिषद एवं भागवत् के माध्यम से इनके ज्ञान से सद्य मुक्ति होती है । ब्रह्मोपनिषद में सृष्टिक्रम, दर्पण रूप झूठी माया ब्रह्म का ज्ञान करा देती है, प्रतिबिम्ब जीव से बिम्ब ब्रह्म का ज्ञान होजाता है ।	३
8	08.mp3	29	⊕	⊕		जन्म-मरण के असह्य दुःख से निवृत्ति का सर्वज्ञ भगवान की वाणी वेद ही साधन है। वेद माता है व माता ही पिता **(निनि० सनि० ससा० ब्रह्म)** को बता सकती है। **ब्रह्मोपनिषद के अनुसार सृष्टिक्रम** :: अद्वितीय ब्रह्म--त्रि०अव्यक्त छायारूप माया--माया में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब/ईश्वर--महत्तत्त्व या बुद्धि में प्रतिबिम्ब/जीव--अहंतत्व/मन--पंचतन्मात्रा--पंचभूत--पंचीकरण-- **स्थूल देह**	1
9	09.mp3	34	⊕	⊕		**ब्रह्मोपनिषद के अनुसार सृष्टिक्रम** :: **स्थूल शरीर** की रचना उक्तानुसार । पंचतन्मात्राओं से उत्पन्न अपंचीकृत पंचभूतों से १६ तत्त्व का अन्तःकरण अथवा **सूक्ष्म शरीर** उत्पन्न होता है -- ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ५ प्राण, बुद्धि मन चित्त अहंकार । जीवात्मा के अपने ब्रह्म स्वरूप का अज्ञान ही **कारण शरीर** है **गर्भोपनिषद** - सविस्तार वर्णन ।	2
10	10.mp3	30	⊕	⊕		**'कर्म विकर्म अकर्म'** ३ पदार्थ हैं इन्हें जानना चाहिये। कर्म की गति अति गुह्य है। जो कर्म में अकर्म व अकर्म में कर्म को देखता है वह मनुष्यों में बुद्धिमान है वही युक्त अथवा योगी है उसने सभी कर्मों को कर लिया है। श्रुति-वेद के विधान को कर्म अथवा धर्म कहते हैं तथा वेद ने जिनका निषेध किया है वह विकर्म अथवा अधर्म कहलाता है। भगवान जगत के अभिन्निमित्तोपादान कारण हैं। **तैत्तीय उपनिषद** के अनुसार **सृष्टिक्रम** निरूपण ।	
11	11.mp3	30	⊕	⊕	⊕	**वेद में भगवान के ३ रूप ::** निनि०, सनि० व ससा० :: निनि०--'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म', सनि०--माया एवं समष्टिबुद्धि में प्रति-बिम्बित ब्रह्म यानि ईश्वर और ब्रह्मा, ससा०-जगत ईश्वर का विराट स्वरूप एवं राम कृष्ण विष्णु रूप में अवतार :: **ब्रह्मोपनि-षद के अनुसार** संक्षेप में **सृष्टिक्रम** :: **गीता में कर्म के ५ हेतु** = १ अधिष्ठान-देह २ कर्ता-साभास बुद्धि या अन्तःकरण ३ करण-इन्द्रियाँ ४ चेष्टाऐं-प्राणों से क्रिया ५ दैवम-इन्द्रियों के प्रेरक देवता :- नेत्रों के सूर्य, हाथों के इन्द्र, पैरों के विष्णु, नाक के अश्वनि, कान के दिग् देवता । आत्मा साक्षी चेतन द्रष्टा मात्र है, आत्मा का बुद्धि में प्रतिबिम्ब यानि चिदाभास ही भ्रम से कर्तापन का अभिमान करता है और पाप-पुन्य कर्म करके सुख-दुःख का भर्ता एवं जन्म-मरण का धर्ता बनता है ।	*** विशेष *** ४
12	12.mp3	29	⊕	⊕		**वेद में भगवान के ३ रूप ::** निनि०, सनि०, ससा० का स्वरूप निरूपण :: सनि०समष्टिबुद्धि प्रथम जीव ब्रह्मा ने ससा० चतुर्मुख रूप धारण किया उसे शोक-मोह से ग्रस्त देखकर सनि०ईश्वर ने ससा० चतुर्भुज विष्णु का रूप धारण कर ब्रह्मा को वेद का उपदेश किया । गुण और आकार माया के हैं, हम निनि० हैं हम गुण और आकारों से अलग व असंग हैं ।	५
13	13.mp3	26	⊕	⊕	⊕	भगवान अकर्म हैं उनमें एक भी कारक नही है। यह जगत स्वभाव से यानि स्वयं ही होता है। सच्चिदानंद में छाया की तरह माया का प्रादुर्भाव होता है और आत्मा या चेतन की प्रेरणा से माया ही जगत के रूप में परिणित हो जाती है। कर्तापन इस माया या प्रकृति में होता है। जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार का काम माया ही करती हैं। माया हमारे अधिष्ठानपने में ही ये खेल करती है और हम ही इस माया 'जा०स्व०सु०' को देखने वाले हैं किन्तु माया तो जड़ है उसे ज्ञान नहीं है।	Smp
14	14.mp3	30	⊕	⊕	⊕	भगवान के १ **स्वरूप लक्षण** = 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' २ **तटस्थ लक्षण** = 'यतो व ईमानि भूतानि जायंते ....तद् ब्रह्म'। द्रष्टा सत्य है व दृश्य माया है झूठा है। हमारा स्वरूप द्रष्टा 'सच्चिदानंद ब्रह्म' है और ये जगत यानि देह इ०मन बद्धि प्राण मिथ्या हैं।	Smp
15	15.mp3	33	⊕	⊕	⊕	हे ब्रह्मन ! मुझ अखंड आनंद सिन्धु में ये जगतरूपी लहरें मायारूपी पवन के निमित्त से उत्पन्न होती, रहती व विलीन होती हैं। हर तरंग में एक जल ही समाया हुआ है व सब तरंगें एक जल में ही है। जल से अलग तरंग रह ही नहीं सकती। पवन के शान्त होने पर मैं एक अकेला ही रह जाता हूँ। मेरा सच्चिदानंद स्वरूप **'अस्ति भाति प्रिय'** रूप से जगत में सर्वत्र व्याप्त है।	Smp
16	16.mp3	30	⊕	⊕	⊕	प्रथम जीव ब्रह्मा को भगवान विष्णु का चतुर्भुज रूप में ब्रह्म स्वरूप का उपदेश **चतुःश्लोकी भागवत् - १** हे ब्रह्मन! सृष्टि के आदि में एक मैं ही था, केवल मध्य में ही ये 'जा०स्व०सु०' छाया रूपी माया मेरे अधिष्ठानपने में स्वयं ही प्रकट हो गयी । अन्त में पुनः मैं अकेला ही रह जाता हूँ । मैं अकर्म हूँ व सभी कर्म प्रकृति में हैं । हमारा स्वरूप सच्चिदानंद है, द्रष्टा है व जो कुछ दृश्य है वह आने-जाने वाली झूठी माया है। जो सदा रहता है वह ब्रह्म है।	Smp
17	17.mp3	28	⊕	⊕	⊕	**चतुःश्लोकी भागवत् - २** हे ब्रह्मन! सृष्टि के आदि में 'न सत, न असत् न इनसे परे' कुछ नहीं थे यानि 'जा०स्व०सु०' नहीं थे बस एक मैं ही था, इनके बाद भी मैं ही शेष रहता हूँ तथा माया से मध्य में 'जा०स्व०सु०' भी मैं ही हूँ। आदि में जल है, अन्त में भी जल है, मध्य में तरंगें प्रतीत होती हैं किन्तु वस्तुतः वे जल ही हैं यानि सत् भी मैं हूँ और असत् भी मैं हूँ। ब्रह्म रूप से सत् भी मैं हूँ व जगत रूप से असत् भी मैं हूँ, एक भी मैं हूँ अनेक भी मैं हूँ। अनेक-रूप एक-रूप से ही उत्पन्न होता है अतः *''ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव न परा''*	Smp
18	18.mp3	23	⊕	⊕	⊕	वेद में भगवान कम २ रूप : **निनि०**--परमसत्य स्वरूप 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' है उसमें देह इ० मन बुद्धि प्राण न होने से वह अव्यवहार्य है । भगवान अपनी इच्छा शक्ति से गुरु ब्राह्मण मनुष्यों की रक्षा, शिक्षा व दुष्टों के नाश आदि व्यवहार के लिये **ससा०** धारण करते हैं । जीव का निनि० स्वरूप भी शुद्ध सच्चिदानंद ब्रह्म ही है ।	
19	19.mp3	29	⊕	श्रीमद्		वेद में भगवान के ३ रूप :: १ **निनि०**--भगवान का परमसत्य स्वरूप 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' है, ये सारे संसार का आधार - अधिष्ठान है किन्तु इससे सृष्टि नहीं होती २ **सनि०**--त्रिगुणात्मिका माया के साथ ब्रह्म मायापति **ईश्वर** कहलाता है वे ही जगत	

				भागवत् १-१-१	की उत्पत्ति पालन संहार करता हैं, माया बिना सृष्टि नहीं हो सकती ३ **ससा०**--गुणों के साथ 'राम कृष्ण' के रूप में आकार धारण कर भगवान सगुण-साकार होते हैं ।	भाग १
20	20.mp3	30		श्रीमद् भागवत्	महर्षि व्यासजी कहते हैं मैं शिष्यों सहित **निनि०** परमसत्य 'सच्चिदानंद' का ध्यान करता हूँ जिनकी उत्पत्ति-नाश नहीं होता, 'जा० स्व०सु०' मृगतृष्णा के जल के समान अथवा पुरुष की छाया के समान मिथ्या प्रतीत होते है जैसे रज्जु के अज्ञान से लोग रज्जु को सर्प रूप देखने लगते हैं ऐसे ही परमसत्य के अज्ञान से परमसत्य ही जगत रूप में दिखाई पड़ने लगता है। परमसत्य अधि- ष्ठान है और जगत उसमें अध्यास है। ब्रह्म ही सत्य है जगत मिथ्या है जीव तो ब्रह्म ही है, ब्रह्म और जीव में भेद नहीं है।	भाग २ Imp
21	21.mp3	32		श्रीमद् भागवत् १-१-१	वेद में भगवान के ३ रूप :: १ **निनि०** --'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' जो संसार का आधार-अधिष्ठान है किन्तु इससे सृष्टि नहीं होती २ **सनि०**--पुरुष में छाया के समान उत्पन्न त्रिगुणात्मिका विद्या-माया में प्रतिबिम्बित ब्रह्म मायापति **ईश्वर** व अविद्या-माया में प्रतिबिम्बित ब्रह्म **जीव** कहलाता है। ब्रह्म अधिष्ठान व माया अध्यास है और इनमें प्रतिबिम्ब ईश्वर/जीव भी आभास हैं। दोनों का अभी आकार नहीं है। सनि०-प्रथम जीव 'ब्रह्मा' का शोक-मोह दूर करने के लिये सनि० ईश्वर ने ३ **ससा०**-चतुर्भुज विष्णु रूप धारण कर ब्रह्मा को ससा० चतुर्मुखरूप में चतुश्लोकी भागवत का उपदेश दिया, **प्रथम श्लोक व्याख्या** :- - -	भाग ३
22	22.mp3	32		श्रीमद् भागवत्	**श्रीमद्भागवत् में १-१-१** श्लोक के चार चरण हैं :: **४था चरण** - भगवान के निनि० स्वरूप निरूपण **३सरा चरण** - माया का निरूपण :- सच्चि०ब्रह्म के अज्ञान से मरुभूमि में मृगतृष्णा के जल के समान ये जगत भासता है, **दूसरा चरण** - भगवान का ससा० स्वरूप निरूपण एवं **पहला चरण** - सनि० स्वरूप निरूपण ।	भाग ४
23	23.mp3	31			वेद में भगवान के ३ रूप :: १ **निनि०--'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म'** २ **सनि०**--विद्या-माया में प्रतिबिम्बित ब्रह्म मायापति **ईश्वर** व अविद्या-माया में प्रतिबिम्बित ब्रह्म **जीव** कहलाता है ३ **ससा० जीव का स्वरूप :: 'ये एव हृदि अंतर्ज्योतिः पुरुषः'**	
24	24.mp3	31			भगवान के ज्ञान के साधन ४ कृपाऐं हैं :: १ - ईश्वर कृपा २ - वेद कृपा ३ - गुरु कृपा ४ - आत्म कृपा	
25	25.mp3	33			**अध्यात्म रामायण** - सीताजी द्वारा हनुमानजी को भ०राम के निर्गुण-निराकार स्वरूप का निरूपण::'रामं विद्धि परमब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयमयम्' संक्षेप में भ०राम के जन्म से राज्याभिषेक तक रामकथा एवं सीताजी के महाकाली रूप में सहस्त्रमुखरावण वध प्रसंग	
26	26.mp3	29			भ०राम द्वारा आत्मा परमात्मा व अनात्मा का स्वरूप निरूपण :: घट के अंदर आकाश **घटाकाश** व घट के बाहर **महाकाश** और घट के भीतर जल में प्रतिबिम्बित आकाश **जलाकाश या प्रतिबिम्बाकाश** कहलाता है। जलाकाश झूठा है एवं उसमें पड़ा प्रतिबिम्ब भी झूठा है। शरीर रूपी घड़े में बुद्धिरूपी जल भरा है उसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है, परमात्मा के बुद्धिरूपी जल में पड़े आभास को ही **जीव/चिदाभास** कहते हैं ये **अनात्मा** है। शरीर के भीतर यानि बुद्धि-अवछिन्न भगवान **आत्मा** है और शरीर के बाहर जो परिपूर्ण व्यापक भगवान है वह **परमात्मा** है। विषयों का ज्ञान, बन्ध-मोक्ष चिदाभास को होता है। ये प्रतिबिम्ब अथवा चिदाभास ही जीव कहलाता है, यही 'कर्ता' एवं देह इन्द्रिय मन बुद्धि में अभिमान करके 'भोक्ता' भी यह चिदाभास ही बनता है और सुख-दुःख को भोगने के लिये जन्मता-मरता रहता है। अतः चिदाभास को मिथ्या जान। तेरा मेरा स्वरूप तो एक ही है।	
27	27.mp3	30		माण्डूक्य उ० प्रथम चरण	**भ०राम द्वारा हनुमान को अपने निनि०स्वरूप का उपदेश ::** एक मा०उ० ही मुमुक्षु को मोक्ष देने के लिये पर्याप्त है अतः अब मैं तुम्हें **अथर्वेदीय माण्डूक्य उपनिषद** सुनाता हूँ। जो कुछ भी दिखाई पड़ रहा है वह ओंकार है, ये सारा संसार ओंकार का ही विस्तार है। भूत भविष्य वर्तमान भी सब ओंकार है एवं त्रिकालातीत भी ओंकार है। ये सब ब्रह्म है हमारा तुम्हारा आत्मा भी ब्रह्म है अतः वह जो ब्रह्म है वही हमारा तुम्हारा आत्मा है। आत्मा के ४ चरण है। वास्तव में तो ब्रह्म एक अद्वितीय है किन्तु माया से वह ४ रूप धारण कर लेता है। प्रथम चरण :: प्रथम चरण का जागृत स्थान है व बाहर की तरफ ज्ञान है, ७ लोक ही सात अंग हैं, इसके १६ मुख हैं, इसका नाम वैश्वानर है ये ब्रह्म अथवा हमारी आत्मा का पहला चरण है। इसी चिदाभास को बन्ध-मोक्ष होता है। देह में अहंकार अशुद्ध है इसे बन्ध तथा देह द्रष्टा 'आत्मा' में अहंकार शुद्ध है, इसी से मुक्ति-मोक्ष है।	भाग १